नव भारत
| संस्थापक : स्व. रामगोपाल माहेश्वरी | प्रेरणा स्त्रोत : स्व. प्रफुल्ल माहेश्वरी |

जल गंगा संवर्धन अभियान, एक सार्थक योजना

मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव द्वारा गुड़ी पड़वा के पावन अवसर पर 'जल गंगा संवर्धन अभियान' के तीसरे चरण का शुभारंभ केवल एक प्रशासनिक पहल नहीं, बल्कि एक दूरदृष्टि से भरा सामाजिक-सांस्कृतिक संदेश भी है. जब पूरा देश जल संकट की चुनौती से जूझ रहा है, तब 55 जिलों में एक साथ इस तरह का व्यापक अभियान चलाना राज्य सरकार की प्राथमिकताओं को स्पष्ट करता है.

लगभग 2,500 करोड़ रुपए के बजट के साथ यह अभियान केवल आंकड़ों का खेल नहीं, बल्कि जमीन पर ठोस बदलाव की एक गंभीर कोशिश है. 19 मार्च से 30 जून तक चलने वाला यह महाअभियान उस समय में आयोजित किया जा रहा है, जब मानसून से पहले जल संरचनाओं को मजबूत करना अत्यंत आवश्यक होता है. इस दृष्टि से समय का चयन भी रणनीतिक और व्यावहारिक है. अभियान के तहत 10,000 से अधिक चेक डैम और स्टॉप डैम की मरम्मत, पुराने तालाबों और बावड़ियों का जीर्णोद्धार, सूखी नदियों का पुनर्जीवन और भूजल रिचार्ज के लिए नई संरचनाओं का निर्माण जैसे कार्य, यदि प्रभावी ढंग से क्रियान्वित होते हैं, तो यह प्रदेश की जल संरचना में स्थायी सुधार ला सकते हैं. मध्य प्रदेश जैसे कृषि प्रधान राज्य के लिए यह पहल केवल पर्यावरणीय नहीं, बल्कि आर्थिक स्थिरता का भी आधार बन सकती है.

इस अभियान की सबसे महत्वपूर्ण विशेषता इसकी बहु-विभागीय भागीदारी है. 18 विभागों का एक साथ काम करना प्रशासनिक समन्वय की एक बड़ी परीक्षा भी है और अवसर भी. पंचायत एवं ग्रामीण विकास विभाग को नोडल बनाकर सरकार ने यह संकेत दिया है कि जल संरक्षण का वास्तविक केंद्र गांव और स्थानीय समुदाय ही हैं. यदि पंचायत स्तर पर सक्रियता और पारदर्शिता सुनिश्चित होती है, तो यह अभियान जन-भागीदारी का एक सफल मॉडल बन सकता है. इंदौर के इस्कॉन मंदिर से अभियान की शुरुआत और गंगा जल अर्पण जैसे सांस्कृतिक प्रतीक यह दर्शाते हैं कि सरकार जल संरक्षण को केवल तकनीकी या विकासात्मक मुद्दा नहीं, बल्कि आस्था और जनभावना से जोड़कर देख रही है. भारत जैसे देश में, जहां प्रकृति और संस्कृति का गहरा संबंध है, यह दृष्टिकोण अधिक प्रभावी साबित हो सकता है. जब जल संरक्षण एक 'जन-आंदोलन' का रूप लेता है, तभी उसकी सफलता सुनिश्चित होती है.

हालांकि, चुनौतियां भी कम नहीं हैं. पूर्व के कई अभियानों की तरह यह पहल भी केवल कागजों तक सीमित न रह जाए, यह सुनिश्चित करना सबसे बड़ी जिम्मेदारी होगी. कार्यों की गुणवत्ता, भ्रष्टाचार पर नियंत्रण और समयबद्ध क्रियान्वयन ऐसे पहलू हैं, जिन पर सरकार को विशेष ध्यान देना होगा. साथ ही, स्थानीय समुदायों की निरंतर भागीदारी के बिना इस तरह के अभियान लंबे समय तक प्रभावी नहीं रह सकते. कुल मिलाकर, 'जल गंगा संवर्धन अभियान' केवल जल संरक्षण की पहल नहीं, बल्कि यह आने वाले समय की विकास राजनीति का संकेत भी है. जो राज्य अपने प्राकृतिक संसाधनों का संरक्षण करेगा, वही स्थायी विकास की दौड़ में आगे रहेगा. मध्य प्रदेश ने इस दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम उठाया है. अब आवश्यकता इस बात की है कि यह संकल्प जमीनी हकीकत में बदल सके.

सबसे बड़ी बात यह है कि मानसून आने के काफी पहले यह अभियान शुरू किया गया है. जाहिर है इससे जल संवर्धन की दृष्टि से महत्वपूर्ण काम होगा.

एआई : रोजगार का संकट नहीं परिवर्तन का संकेत

ओजस्कर पाण्डेय

तकनीकी बदलावों के हर दौर में एक सामान्य आशंका उभरती रही है—क्या मशीनें इंसानों की नौकरियां छीन लेंगी? आज यही सवाल आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (एआई) के संदर्भ में फिर से सामने है. एक ओर यह धारणा जोर पकड़ रही है कि एआई रोजगार का सबसे बड़ा शत्रु है, तो दूसरी ओर यह तर्क भी उतनी ही मजबूती से दिया जा रहा है कि एआई भविष्य का सबसे बड़ा रोजगार सृजक बन सकता है. सच्चाई इन दोनों के बीच कहीं स्थित है, जिसे समझने के लिए भावनाओं से अधिक तथ्यों और अनुभवों पर आधारित दृष्टिकोण अपनाना आवश्यक है.

> समाज के स्तर पर भी मानसिकता में बदलाव जरूरी है. तकनीक को भय के रूप में देखने के बजाय उसे अवसर के रूप में स्वीकार करना होगा. 'लाइफ लॉन्ग लर्निंग'—अर्थात जीवन भर सीखते रहने की प्रवृत्ति—अब विकल्प नहीं, बल्कि आवश्यकता बन चुकी है. जो व्यक्ति और समाज इस बदलाव को अपनाने में सक्षम होंगे, वही भविष्य में सफल होंगे. अंततः, एआई को 'जॉब किलर' या 'जॉब क्रिएटर' के रूप में देखने की बहस एक सीमित दृष्टिकोण को दर्शाती है. एआई वास्तव में 'जॉब ट्रांसफॉर्मर' है—यह रोजगार के स्वरूप, कौशल और संरचना को बदल रहा है. यह परिवर्तन कुछ के लिए चुनौती और कुछ के लिए अवसर लेकर आता है. प्रश्न यह नहीं है कि एआई क्या करेगा, बल्कि यह है कि हम उसके साथ क्या करने के लिए तैयार हैं. यदि सही नीतियों, शिक्षा सुधार और सामाजिक जागरूकता के साथ इस तकनीक को अपनाया जाए, तो एआई न केवल रोजगार सृजन का माध्यम बनेगा, बल्कि एक अधिक उत्पादक, समावेशी और नवाचार-प्रधान अर्थव्यवस्था की नींव भी रखेगा. अन्यथा, यह असमानता और असुरक्षा को बढ़ाने का कारण भी बन सकता है. चुनाव हमारे हाथ में है—डर के साथ पीछे हटना या दूरदर्शिता के साथ आगे बढ़ना.

इतिहास इस बहस का सबसे बड़ा साक्षी है. औद्योगिक क्रांति से लेकर कंप्यूटर और इंटरनेट के दौर तक, हर नई तकनीक के आगमन पर नौकरियों के खत्म होने का भय व्यक्त किया गया. मशीनों के आने से हस्तशिल्प उद्योग प्रभावित हुआ, कंप्यूटर के प्रसार से टाइपिस्ट और पारंपरिक लेखाकारों की भूमिका बदली, और इंटरनेट ने कई पुराने व्यवसायों को अप्रासंगिक बना दिया. लेकिन इन परिवर्तनों के साथ ही नए उद्योग, नए कौशल और नए रोजगार भी सामने आए. यही पैटर्न एआई के साथ भी दिखाई देता है. आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (एआई) को लेकर आज की सबसे बड़ी बहस यह है कि क्या यह मानव श्रम का अंत कर देगा या रोजगार के नए द्वार खोलेगा. यह प्रश्न केवल तकनीकी नहीं, बल्कि आर्थिक, सामाजिक और नैतिक भी है. जहां एक ओर एआई के कारण नौकरियों के समाप्त होने की आशंका व्यक्त की जा रही है, वहीं दूसरी ओर इसे भविष्य के सबसे बड़े रोजगार सृजक के रूप में भी देखा जा रहा है. वास्तव में, एआई को 'जॉब किलर' या 'जॉब क्रिएटर' के संकीर्ण दायरे में बांधकर नहीं देखा जा सकता. यह एक ऐसी परिवर्तनकारी शक्ति है, जो रोजगार के स्वरूप, कौशल की मांग और कार्य संस्कृति—तीनों को पुनर्परिभाषित कर रही है.

वैश्विक परिदृश्य के डेटा बताते हैं कि रोजगार पर एआई के प्रभाव को समझने के लिए वैश्विक आंकड़े महत्वपूर्ण संकेत देते हैं. विश्व आर्थिक फोरम की 2023 की रिपोर्ट के अनुसार, वर्ष 2025 तक लगभग 85 मिलियन नौकरियाँ समाप्त हो सकती हैं, लेकिन इसके समानांतर 97 मिलियन नई नौकरियों का सृजन भी होने की संभावना है. यह स्पष्ट करता है कि एआई का प्रभाव 'नेट जॉब लॉस' नहीं, बल्कि 'जॉब ट्रांसफॉर्मेशन' की दिशा में है.

इसी प्रकार, पीडब्लूसी के अनुसार, 2030 तक एआई वैश्विक अर्थव्यवस्था में लगभग 15.7 ट्रिलियन डॉलर का योगदान कर सकता है. यह वृद्धि मुख्यतः उत्पादकता और उपभोग में बढ़ोतरी के कारण होगी, जो अप्रत्यक्ष रूप से रोजगार सृजन को भी बढ़ावा देगी. वहीं, मेकिंसे एवं कंपनी का अनुमान है कि विश्व की लगभग 50% कार्य गतिविधियाँ ऑटोमेट की जा सकती हैं, हालांकि इसका अर्थ यह नहीं कि 50% नौकरियाँ समाप्त हो जाएंगी, बल्कि यह कि उनके स्वरूप में बदलाव आएगा. एआई का सबसे प्रत्यक्ष प्रभाव उन कार्यों पर पड़ रहा है जो दोहराव वाले, नियम-आधारित और पूर्वानुमेय हैं. बैंकिंग, कस्टमर सर्विस, डेटा एंट्री, और बेसिक विश्लेषण जैसे क्षेत्रों में ऑटोमेशन तेजी से बढ़ रहा है. इससे यह आशंका स्वाभाविक है कि कम कौशल वाले लाखों लोग रोजगार से वंचित हो सकते हैं. यह चिंता विशेष रूप से विकासशील देशों के लिए गंभीर है, जहां बड़ी आबादी अभी भी पारंपरिक और कम-कौशल वाले कार्यों पर निर्भर है. एआई को लेकर उत्पन्न भय कोई नया नहीं है. औद्योगिक क्रांति के दौरान मशीनों के आने से श्रमिकों में व्यापक असंतोष था. कंप्यूटर क्रांति के समय भी यह आशंका व्यक्त की गई थी कि मानव श्रम अप्रासंगिक हो जाएगा. लेकिन इतिहास ने यह सिद्ध किया कि तकनीक रोजगार को समाप्त नहीं करती, बल्कि उसे पुनर्गठित करती है. नए उद्योग, नए कौशल और नए अवसर उत्पन्न होते हैं. एआई इसी ऐतिहासिक प्रक्रिया का नवीनतम चरण है.

मध्य क्षेत्र की डायरी

आखिर प्रदेश में अपराधियों के हौसले क्यों हैं बुलंद?

एडीजी को जान से मारने की धमकी

दिलीप झा

प्रदेश के एडीजी ट्रेनिंग राजाबाबू सिंह को जान से मारने की धमकी के बाद कानून व्यवस्था पर सवाल उठना लाजिमी है। गंभीर प्रश्न यह है कि अपराधियों के हौसले इतने बुलंद कैसे हैं? कानून व्यवस्था बनाए रखने में हमारी पुलिस क्या इतनी लचर हो गई है अथवा उन्हें अपना काम नहीं करने दिया जा रहा है। बताया जा रहा है कि अपराधियों ने एडीजी राजाबाबू को उनके निवास पर जाकर धमकी दी है कि अगर रामायण और गीता के सार को पुलिस ट्रेनिंग के दौरान पढ़ाने की बात की तो जान से मार देंगे? मामले की गंभीरता को देखते हुए एडीजी ने जीडीपी और पुलिस आयुक्त को पत्र लिखकर यह मांग की उनके आवास की सुरक्षा बढ़ाई जाए? हालांकि इस मामले में पुलिस ने आनन-फानन में दो आरोपी को गिरफ्तार किया है लेकिन जो मानसिक पीड़ा एडीजी राजाबाबू ने झेली है उसे सुनकर रूह कांप जाती है. एक कार में सवार होकर दो आरोपी नितेश चौरसिया और रूद्राक्ष यादव ने जो तांडव किया वह हैरान करने वाली है। आरोपियों ने एडीजी राजाबाबू के साथ गाली गलौज की और उन्हें डंडे भी दिखया। उधर, शाहपुरा थाने में शिकायत के बाद पुलिस ने दो आरोपी को पकड़कर पूछताछ शुरू कर दी है लेकिन प्रदेश के लोग सरकार को कटघरे में खड़ा कर रहे हैं कि अगर पुलिस के आला अधिकारी को जान से मारने की धमकी मिल रही है तो आम आदमी कैसे सुरक्षित रहेगा।

इसी तरह पिछले सप्ताह हमीदिया अस्पताल के आईसीयू में घुसकर अपराधियों का फायरिंग करना यह दर्शाता है कि सुरक्षा को लेकर हमारे पुलिस प्रशासन की कार्यशैली लुंजपुंज है। हालांकि पुलिस ने बदनामी के बाद आरोपी को बंगलुरु से पकड़कर ले आई है लेकिन पूरे प्रदेश में यह संदेश गया कि सुरक्षा को लेकर हमारी पुलिस सुस्त है चुस्त नहीं। लोग कहते हैं कि मुस्तैदी के साथ कानून व्यवस्था को बनाए रखने में पुलिस प्रशासन नाकाम साबित हो रहा है क्योंकि आए दिन हत्या, लूट और साइबर ठगी जैसी घटनाएं थमने का नाम नहीं ले रही हैं। हालांकि इस बात से कोई इंकार नहीं कर सकता कि हमीदिया अस्पताल में व्यवस्थाएं चरमराई हुई है। यह अस्पताल अपने अजब गजब कारनामों के कारण हमेशा सुर्खियों में बना रहता है। कभी बच्चा चोरी तो कभी कर्मचारियों संग मारपीट जैसी घटनाओं के बदनाम रहा है। लापरवाही की यहां पराकाष्ठा अक्सर देखने को मिलती हैं। गुरुवार को यहां हद हो गई। डाक्टर द्वारा एक बच्चे का डेथ सर्टिफिकेट जारी कर दिया गया जबकि वह 4 घंटे तक जीवित था.

गुना विधायक शाक्य के अमर्यादित बोल

गुना के मानस भवन में गुरुवार को शिक्षा विभाग के कार्यक्रम के दौरान उस समय असहज स्थिति निर्मित हो गई क्योंकि गुना विधायक पन्नालाल शाक्य ने मंच से ही जिला प्रशासन और कलेक्टर किशोर कुमार कन्याल की कार्यप्रणाली पर सवाल उठाते हुए तीखी टिप्पणियां कीं। यह सुनते ही लोग भौचक रह गए। दरअसल विधायक ने गुनिया नदी के जीर्णोद्धार के मुद्दे पर कलेक्टर की ओर इशारा करते हुए गुनिया नदी का जिक्र किया और यहां तक कह दिया कि अगर कार्रवाई नहीं हुई, फिर कभी नहीं होगा। आप जैसे ऐसे अफसर कितने आए और कितने चले जाएंगे। वैसे यह बात किसी से छिपी नहीं है कि विधायक शाक्य भी बड़बोले हैं। विधायक शाक्य ने जिला प्रशासन द्वारा गुनिया नदी के जीर्णोद्धार के लिए उठाए जा रहे कदमों का जिक्र करते हुए कहा कि यह काम इतना आसान नहीं है। उन्होंने कलेक्टर को सचेत किया कि इस मुहिम के दौरान दिल्ली और भोपाल से कई रसूखदारों के फोन आएंगे जो काम रुकवाने का दबाव बनाएंगे। विधायक ने स्पष्ट शब्दों में कहा, अगर आप किसी भी सिफारिशी संदेश के आने से पहले कार्रवाई कर देंगे तभी गुनिया मुक्त हो पाएगी। अगर आप ऐसा करते हैं, तो मैं हर कदम पर आपके साथ खड़ा हूँ, लेकिन कागजों में काम करने से कुछ नहीं होगा। इस दौरान विधायक ने मानस भवन का निर्माण कराने वाले पूर्व कलेक्टर रमाकांत मिश्र को याद किया। उन्होंने वर्तमान कलेक्टर की ओर मुखातिब होते हुए कहा, वह भी जिलाधीश थे और आप भी जिलाधीश हैं। उनके काम को लोग आज भी याद करते हैं। अगर आप आज कार्रवाई नहीं कर पाए, तो भविष्य में कुछ नहीं होगा। हालिया एलपीजी संकट और अन्य परेशानियों पर शोर मचाने वालों को टोकते हुए विधायक ने कहा कि संकट के समय सहनशीलता रखनी चाहिए। उन्होंने कोरोना काल का उदाहरण देते हुए कहा कि जब परिस्थितियां नियंत्रण से बाहर होती हैं, तभी लोग सुधरने की कोशिश करते हैं।

एसिड अटैक के पीछे विकृत मानसिकता

द्वद्वद्व कानून के बावजूद विकृत मानसिकता वाले दरिंदे अपनी अमानुषिक हरकतों से बाज नहीं आते. अहिल्यानगर जिले के संगमनेर में स्कूल से अपने घर साइकिल से लौट रही 12 वर्षीय बालिका को रास्ते में रोककर उस पर एक नराधम ने एसिड डाल दिया और फरार हो गया. विधानसभा में इस एसिड अटैक की गूंज हुई. आरोपी की खोज की जा रही है. मुख्यमंत्री फड़णवीस और पालकमंत्री विखे पाटिल ने इस मामले को गंभीरता से लिया है तथा कहा है कि महिलाओं व बच्चों की सुरक्षा पर जीरो टॉलरेंस नीति अपनाई जाएगी. विधानपरिषद उपसभापति नीलम गो-हे ने नाशिक के विशेष पुलिस महानिरीक्षक को तत्काल कार्रवाई के संदेश दिए व मामले को फास्टट्रैक कोर्ट में चलाने को कहा. ऐसे गंभीर मामले में त्वरित कार्रवाई होनी चाहिए ताकि दोषी को यथाशीघ्र कड़ी सजा मिले. 26 जुलाई 2014 को सुप्रीम कोर्ट के तत्कालीन चीफ जस्टिस आर. एम. लोढ़ा ने एसिड हमलों पर गहरी चिंता जताई थी तथा केंद्र और राज्यों को भी इस संबंध में नोटिस दिया गया था. उन्होंने प्रश्न किया कि एकतर्फी प्रेम में विफल होने पर दरिंदे एसिड हमला करते हैं तो सरकार ऐसे मामलों में ढिलाई क्यों बरतती है? उन्होंने एसिड हमले की पीड़िता के समुचित इलाज व पुनर्वसन का निर्देश दिया था. दिल्ली व झारखंड में भी ऐसी घटनाएं हो चुकी हैं. दिल्ली में हुए प्रकरण के बाद अदालत ने 2013 में एसिड बिक्री पर रोक लगा दी थी लेकिन अब ऐसे मामले फिर होने लगे. एसिड हमले में त्वचा जल जाती है, चेहरा विद्रूप हो जाता है, आंखों को नुकसान पहुंचता है. ऐसा हमला पीड़िता को जीवनभर मानसिक व शारीरिक यातना देने का कृत्य है. विकृत मानसिकता के लोग प्रेमसंबंध टूटने या बदले की भावना से ऐसा हमला करते हैं. भारतीय न्यायसंहिता की धारा 326-अ के अनुसार गंभीर चोट पहुंचाने वाले ऐसे अपराधी को कम से कम 10 वर्ष का कारावास तथा पीड़िता के इलाज का खर्च उठाने की सजा है. एसिड फेंकने पर भी न्यूनतम 5 से 7 वर्ष की कैद का प्रावधान है. यह कानून कठोरता से लागू किया जाना चाहिए, साथ ही समाजकंटकों का आतंक मिटाना बहुत जरूरी है.

संपादकीय बोर्ड | प्रबंध संपादक : सुमीत माहेश्वरी, समूह संपादक : क्रांति चतुर्वेदी

निशानेबाज

नोरा फतेही नाचने को आजाद 'चुनरी सरके' गीत पर विवाद

पड़ोसी ने हमसे कहा, 'निशानेबाज, हमें दिलीपकुमार और वैजयंतीमाला की पुरानी फिल्म 'मधुमती' का गीत पसंद है जिसके बोल हैं- घड़ी घड़ी मेरा दिल धड़के, हाय धड़के, क्यूं धड़के, आज मिलन की बेला में सर से चुनरिया क्यूं सरके !'

हमने कहा, 'चुनरिया या चुनर सिर से सरकने वाला गाना और उस पर किया जाने वाला नाच अब बेहद आपत्तिजनक माना जा रहा है. इसलिए आप भी चुनरी चुनरी वाला गीत गाना बंद कर दीजिए. या तो चुनरी ओढ़नी नहीं चाहिए और यदि ओढ़ ली तो सिर पर पूरी तरह फिक्स होनी चाहिए, उसका सरकना बिल्कुल बर्दाश्त नहीं किया जा सकता.'

पड़ोसी ने कहा, 'चुनरी कोई जानबूझकर क्यों सरकाएगा? क्या सिर पर खूंटी ठोककर उसमें चुनरी अटका लेनी चाहिए ताकि सरके नहीं. रेशम या सिल्क की चुनरी खिसक जाना या सरकना स्वाभाविक है.'

हमने कहा, 'आप वक्त की नजाकत को समझ नहीं रहे. चुनरी सरकने का मामला लोकसभा तक जा पहुंचा है.

समाजवादी पार्टी के सांसद आनंद भदोरिया ने यह मुद्दा सदन में उठाते हुए कहा कि कन्नड़ फिल्म 'केडी : द डेविल' का गाना है- सरसे निन्ना सेरगे सरसे. इस फिल्म के हिंदी संस्करण में इस गाने के बोल हैं-सरके चुनर तेरी सरके. इस गाने पर सिर से पैर तक लचकने वाली नोरा फतेही ने डान्स किया है जो अश्लील या वल्गर माना जा रहा है. ओटीटी प्लेटफार्म या सोशल मीडिया पर इसे बिना रोक-टोक जारी किया गया. इसका युवाओं के दिमाग पर बुरा असर पड़ता है. इसके जवाब में सूचना व प्रसारण मंत्री अश्विनी वैष्णव ने कहा कि यह गाना पहले ही बैन किया जा चुका है.'

पड़ोसी ने कहा, 'निशानेबाज, नोरा फतेही मोरक्को की रहने वाली बेली डान्सर है जो हिंदी फिल्मों में आइटम डान्स करती हैं. इस तरह के कमर मटकाने वाले नाच की वजह से फिल्म चलती है. उसके इस नाच-गाने की वजह से छिड़ी बहस संसद तक पहुंच गई. नोरा फतेही की कला अब बला बन गई है. इससे फिल्म का प्रचार हो गया. इससे भी ज्यादा भड़काऊ गीत व नृत्य पहले भी फिल्मों में आए हैं लेकिन तब बैन नहीं लगा. आपको माधुरी दीक्षित के धक-धक करने लगा तथा चोली के पीछे क्या है जैसे गाने जरूर याद होंगे.'

शब्द-सागर : डॉ. सागर खादीवाला

CROSS WORD 12204

- डॉ. सागर खादीवाला

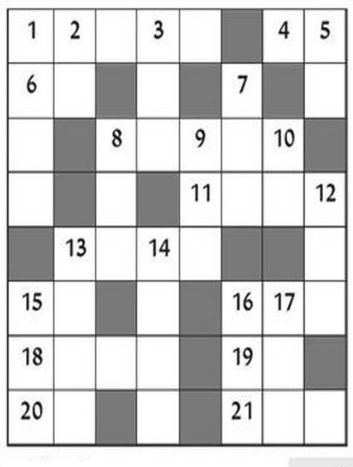

बाएं से दाएं

1. अपमान करना 4. किसी देश का कोई भाग, प्रांत, प्रदेश (उर्दू) 6. देना, खैरात 8. लोगों का मारा जाना, एक साथ बहुत लोगों की हत्या 11. कोई मीठा पेय पदार्थ, सगाई की एक रस्म (उर्दू) 13. अवलंब रहित, निराश्रय 15. चणक, एक अन्न 16. आया हुआ, उपस्थित 18: पाठशाला, विद्यालय (उर्दू) 19. मूल्य, जाल, पाश, फंदा 20. पुरुष, आदमी, पुरुष जाति का 21. सेंध (उर्दू)

ऊपर से नीचे

1. न्यायालय (उर्दू) 2. जंगल 3. झुकने की क्रिया या भाव, नमस्कार 5. व्याघ्र, शेर 7. वार, चोट, आघात 8. तरल पदार्थ को ठोस या गाढ़ा करना, दृढ़तापूर्वक बैठाना, स्थिर करना 9. संदेह, शंका, आशंका 10. ईश्वर, परमेश्वर (उर्दू) 12. तला हुआ (सं.) 13. निरादर, अपमान 14: जो परिश्रम द्वारा पूरा किया जा सकता हो 15. फुलवारी, छोटा बगीचा, रौनक की जगह (उर्दू) 16. लेना, ग्रहण करना 17. जानेवाला, सुगंध, गंध.

Solution 12203

अ	भि	वा	द	न	■	शं	का
स	खा	■	श	ग	ल	■	य
ह	री	■	ह	■	■	धी	र
यो	■	वा	रा	ण	सी	■	ता
ग	ब	न	■	■	ता	ली	■
■	द	र	ख्वा	स्त	■	प	र
का	ल	■	हि	■	प	ना	ह
या	■	कु	श	ल	ता	■	न

ज्योतिषाचार्य पंडित प्रियंका नारायणशंकर व्यास, कोतवाली बाजार, जबलपुर (म.प्र.)

आज जिनका जन्मदिन है

वर्ष के प्रारंभ में व्यर्थ की यात्राओं में धन व्यय होगा, मानसिक उलझन रहेगी, शत्रु पक्ष प्रबल रहेगा, वर्ष के मध्य में व्यक्तिगत संबंधों में सुधार होगा, सामाजिक कार्यों में ख्याति मिलेगी, वर्ष केअन्त में व्यर्थ की भागदौड़ से मन तनावग्रस्त रहेगा, दाम्पत्य जीवन सुखमय रहेगा.

मेष और वृश्चिक राशि के व्यक्तियों का शत्रु पक्ष प्रबल रहेगा, वृष और तुला राशि के व्यक्तियों का यात्राओं में धन व्यय होगा, कर्क राशि के व्यक्तियों को मानसिक उलझन रहेगी, सिंह राशि के व्यक्तियों का व्यक्तित्व सुखमय निखरेगा, मिथुन और कन्या राशि के व्यक्तियों को दाम्पत्य जीवन मधुर रहेगा, मकर और कुंभ राशि के व्यक्तियों का स्वाभाव मिलनसार और सामंजस्यपूर्ण रहेगा, धनु और मीन राशि के व्यक्तियों को दाम्पत्य जीवन साधारण और आनन्दमय रहेगा.

मेष- कोर्ट कचहरी आदि के कार्यों में सफलता मिलेगी. निजी दायित्वों की पूर्ति होगी. परिश्रम अधिक करना होगा. साहस पराक्रम बढ़ेगा.

वृषभ- संतान के स्वास्थ्य की चिन्ता रहेगी. मनोवांछित सफलता मिलने का योग है. वाणी कटुता आपके कार्य में व्यवधान कर सकती है. संयम से कार्य करें.

मिथुन- रक्त संबंधियों, पड़ोसियों से संतुलित संभाषण हितकर रहेगा. पूज्य व्यक्ति की सलाह उपयोगी रहेगी. उदर विकार रह सकता है.

कर्क- कार्य व्यस्तता अधिक रहेगी. सुख सुविधाओं में वृद्धि होगी. प्रिय संदेश प्राप्त होगा. निजी पुरूषार्थ बना रहेगा. यश प्राप्त होने का योग है.

सिंह- नये संबंधों का लाभ होगा. मांगलिक कार्यों पर विचार होगा. परिश्रम की अधिकता रह सकती है. प्रियजनों का सहयोग बना रहेगा.

कन्या- किसी अधिकारी के कारण मानसिक तनाव रह सकता है. समझौता की नीति अपनाने से लाभ होगा. मानसिक चिन्ता रह सकती है. फिजूल खर्च बढ़ेगा.

तुला- कार्य क्षेत्र में लाभ होगा. नये मैत्री संपर्क स्थापित होंगे, पूज्य व्यक्ति की सलाह उपयोगी रहेगी. सुख मनोरंजक यात्रा का योग है.

वृश्चिक- शत्रु बाधा दूर होगी. जीवनसाथी का सहयोग मिलेगा. पारिवारिक प्रसन्नता बनी रहेगी. मानसिक संतोष और हर्षदायक वातावरण रहेगा.

धनु- मान सम्मान एवं प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी. विरोधी वर्ग सक्रिय रहेंगे. धार्मिक क्षेत्र में लाभ प्राप्त होगा. कार्यों की अधिकता रह सकती है.

मकर- आपके प्रयासों में सफलता मिलेगी. यात्रा में सावधानी व सतर्कता बांछनीय है. नवीन कार्यों में विचार विमर्श होगा. प्रतिष्ठा बढ़ेगी.

कुम्भ- उदर विकार तथा रक्त पीड़ा से तकलीफहो सकती है. सोचे हुये कार्यों में अनावश्यक विरोध हो सकता है. पत्राचार में सावधानी रखें.

मीन- नवीन योजनाओं का क्रियान्वयन होगा. मित्रों का सहयोग मिलेगा. दिनचर्या नियमित रहेगी. अतिथि आगमन हो सकता है. यश मिलेगा.

आज जन्मे शिशु का भविष्य

आज जन्म लिया बालक स्वस्थ्य, सुन्दर, हृष्टपुष्ट, मिलनसार, धार्मिक, प्रवृत्ति का होगा. क्रोध की भावना अधिक रहेगी. शिक्षा के क्षेत्र में उन्नति करेगा. माता पिता का विशेषभक्त होगा. प्रवास का शौकीन होगा. मनोरंजन, आमोद प्रमोद का शौकीन होगा.

उदयकालीन ग्रह चाल

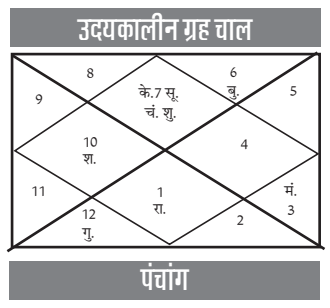

पंचांग

रा.मि. 30 संवत् 2083 चैत्र शुक्ल तृतीया शनिवासरे रात 1/48, अश्विनी नक्षत्रे रात 2/31, ऐन्द्र योगे रात 8/51, तैतिल करणे सू.उ. 6/0, सू.अ. 6/0, चन्द्रचार मेष, पर्व-सौभाग्यसुंदरी तीज व्रत, शु.रा. 1,3,4,7,8,11 अ.रा. 2,5,6,9,10,12 शुभांक- 3,5,9.

व्यापार भविष्य

चैत्र शुक्ल तृतीया को अश्विनी नक्षत्र के प्रभाव से गेहूँ, जौ, चना, बाजरा, के भाव में मंदी होगी. गुड़ खांड़ शक्कर, कालीमिर्च, धनियां, बादाम, लहसुन, प्याज, अदरक, के भाव में तेजी होगी. सरसों, अलसी, अरंडी, के भाव में नरमी रहेगी. भाग्यांक 8065 है.

SUDOKU 7336

2	9			5				4
4			2		7		8	
	1	6		8				3
8		5		9				7
3	6			2			1	9
1				3		5		2
5				7		6	3	
	3		1		8			5
9				6			2	1

■ प्रत्येक पंक्ति में 1 से 9 तक के अंक भरे जाने आवश्यक है. इनका क्रमवार होना आवश्यक नहीं है. आड़ी और खड़ी पंक्ति में एवं 333 के वर्ग में किसी भी अंक की पुनरावृत्ति न हो इसका विशेष ध्यान रखें. ■ पहले से मौजूद अंकों को आप हटा नहीं सकते. ■ पहेली का केवल एक ही हल है.

नवभारत सू-दोकू 7335

7	8	1	6	9	4	2	5	3
2	6	4	5	3	6	1	7	9
5	3	9	1	2	7	4	6	8
9	5	8	7	4	1	3	2	6
1	2	3	9	5	6	7	8	4
4	7	6	3	8	2	9	1	5
3	9	7	2	6	5	8	4	1
6	4	2	8	1	9	5	3	7
8	1	5	4	7	3	6	9	2